जनवरी-मार्च 2020

नालको NALCO

Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

Patron
Sridhar Patra, CMD

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Shagufta Jabeen
Roshan Pandey

Co-ordinator
Sabita Patnaik

Design Concept
Aswini Sutar

जनवरी-मार्च 2020

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से
राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

Editorial...

"And Spring arose on the garden fair,
Like the Spirit of Love felt everywhere;
And each flower and herb on Earth's dark breast
rose from the dreams of its wintry rest."

When the month of March is here and the Spring Season has started casting its magic, the cheery and chirpy birds are calling me peeping through my window, it reminds me of these lines by poet Percy Bysshe Shelley from his beautiful creation 'The Sensitive Plant'. The joyful season of the year, 'Spring' unfolds many beautiful surprises and brings along many good gifts in its kitty. And I am happy that the creation of NALCO Mahila Samiti – Sanginee – is having its fresh edition in the beginning of this year's Spring. Life begins afresh with spring and Sanginee is also going to have a fresh lease of life with this new edition.

In this edition, we have tried to attempt some new ideas, which would enhance the quality of this magazine. Each page of the Sanginee, now and hereafter, would give its readers a different flavour and present a new vibrancy. Each poem, story, article would be adorned with the beauties of thought, creativity and presentation, like the array of flowers in a garden. The beauty of this magazine would not be limited to glorifying womanhood only, rather it would be a reflection of emotions of humanity.

Any society that recognizes and harnesses the energy and creativity of women remains in an advantageous position in the growth trajectory. I strongly feel that womanhood is itself a great virtue. This carries with itself, power of imagination & creative visualization that adds value to humanity as a whole. Sanginee has given a very beautiful platform of expression to the women collective of NALCO, who have been the backbone of this organization, in the backstage though, contributing relentlessly towards the success of this entity through so much sacrifice and compromise.

It is rightly said: "Behind every successful man, there is a woman." Then, it is also right that "Behind every successful organization, there is a group of strong and caring women, who, take the responsibility of the family and give their better-halves their space and freedom to work for the organization." I believe, NALCO Mahila Samiti is an epitome of this strength of women, which works as a hidden magic wand in the success of an organization. I am happy that all the members of this group, who are unique in their own ways, have always tried to be an integral part of Navratna NALCO and have always worked as an extended family in discharging the company's social obligations.

The name of the magazine itself connotes that this would be a reflection of the unique friendship and togetherness among the members of NALCO Mahila Samiti. 'In life, have a friendship that is like a mirror and shadow. The mirror doesn't lie and shadow never leaves'. These are profound thoughts that bind us together in social groups. The desire for lasting friendship and togetherness, have always driven our social interactions. I wish that 'Sanginee' would continue to be a reflection of the unique bond among the members of NALCO Mahila Samiti.

This new edition of Sanginee is an amalgamation of colourful emotions, vibrant fragrance of creativity and fresh vibes of beautiful expression – as beautiful as the flowers in the garden penned in the poem 'The Sensitive Plant'. I would like to congratulate all the members of NALCO Mahila Samiti and the team behind this for making this possible. The effort will be to keep it up and to make Sanginee better in each upcoming edition.

(Sasmita Patra)
President, NALCO Mahila Samiti

ख़ुशी

ना ख़ुशी खरीद पाता हूँ ना ही गम बेच पाता हूँ,
फिर भी ना जाने मैं क्यों हर रोज कमाने जाता हूँ।

ख़ुशी कहाँ हम तो गम चाहते हैं,
ख़ुशी उसको दे दो जिसको हम चाहते हैं।

पता न चला कि इश्क के जाल में फँसे कब थे,
मरते वक्त याद न आया कि हँसे कब थे।

मुझे ख़बर नहीं ग़म क्या है और ख़ुशी क्या है,
ये ज़िंदगी की है सूरत तो ज़िंदगी क्या है।

श्रीमती सस्मिता पात्र
अध्यक्षा, नालको महिला समिति

देखो, फिर बसंत ऋतु आई

देखो, फिर बसंत ऋतु आई,
प्रकृति में नवजीवन लाई ,
सूखी डालियाँ फिर लहराईं,
कोमल पातियाँ फिर मुस्काईं ।

चारों ओर हरियाली छाई,
देख उसे चिड़ियाँ चहचहाईं,
वृक्षों ने बाहें फैलाईं,
चेहरों पर मुस्कान आई ।

जीवन है सुख –दुख का संगम,
प्रकृति हमें सीख है देती,
ये बात किसे कब समझ है आई,
देखो, फिर बसंत ऋतु आई ।

सदियों से जुड़ा प्रकृति का नाता तोड़ा,
मानव को विपत्तियों ने घेरा,
अभिलाषाओं को छोड़ प्रकृति का करो आलिंगन,
जाने न दो ये मौका सुनहरा ।

तूफानों को यह झेल जाती,
धैर्य रखकर सब सह जाती,
फिर मुस्कुराकर यह गाती,
है यह जीवन मेरी थाती ।

प्रकृति तो है ईश्वर का वरदान,
खो न जाये इसकी पहचान,
आओ मिलकर इसे बचाएँ,
समय रहते यह ऋण चुकाएँ ।

देखो फिर बसंत ऋतु आई,
प्रकृति में नवजीवन लाई ।

कामना सिंह
भुवनेश्वर

जिन्दगी का नज़रिया

मैं जब भी टूटे-फूटे घरौंदों के पास से गुजरती
तो अक्सर, बाहर ही, रहनेवालों का सैलाब दिखाई पड़ता ।
मेरे मुँह से तुरंत निकलता, जनसंख्या फूट पड़ी है !

और वे गगनचुम्बी खामोश बँगले,
जिनके बुलंद दरवाज़े सदा ही बंद रहते हैं ।
न अंदर से कोई स्वर,
न बाहर ही कोई बशर नज़र आता है ।
इन्हें देख प्रश्न उठता है, यहाँ कोई रहता भी है ?

फिर एक दिन जब,
एक फूस की झोंपड़ी,
जिससे चाय की भट्टी का धुआँ उठ रहा था ,
हमारा असरा बनी !
मेरा वाक्य बदल गया ।
मैंने कहा,
इन झुग्गीनुमा घरों में संसार बसता है ,
इसलिए इनकी दरों में किवाड़ नहीं होते !!

नादिरा ख़ान
दामनजोड़ी

जीना इसी का नाम है

सुबह के 7 बजे थे। शैला बच्चों के लिए नाश्ता तैयार कर रही थी। बार-बार घड़ी देखकर खीजते हुए मन ही मन बोली, “इतनी बार कहा था आशा को कि आज मुझे होली की खरीददारी के लिए बाहर जाना है, 9 बजे लेडिज क्लब की प्री होली सेलिब्रेशन्स की तैयारी में जाना है, मगर क्या मजाल है कि वह वक्त पर आ जाए।” आशा शैला की कामवाली बाई थी।

शेखर ने बाथरूम से आवाज लगाई, “शैला प्लीज मेरी रेड वाली टाई निकाल देना, मुझे मीटींग के लिए देर हो रही है।” पति की आवाज सुनकर शैला ने उनकी पसंद की टाई निकाल कर बेड पर रख दी। साथ ही साथ रूमाल, फोन और बटुआ भी रख दिया।

इसी बीच नीरज और नैना भी स्कूल के लिए तैयार होकर डाईनिंग टेबल पर आ गए थे। दोनों के फाइनल एग्जाम्स का आज आखरी दिन था। बच्चों को टोस्ट और जूस देकर शैला ने शेखर और अपने लिए भी नाश्ता तैयार किया। बच्चों का टिफिन बॉक्स और वाटर बॉटल भी तैयार किया। बच्चे नाश्ता कर स्कूल के लिए निकल पड़े। वह उन्हे बाहर तक छोड़ने आयी। आते-जाते दोनों बच्चों को हाथ हिलाकर ऑल द बैस्ट फॉर योर एक्जाम्स कहकर दरवाजा बंद कर अंदर आयी। नीरज पांचवी में और नैना सातवीं में थी, बस शैला और शेखर उनकी जरूरत पड़ने पर मदद करते थे।

शेखर तैयार होकर दफ्तर के लिए निकल पड़ा। शैला ने उन्हे भी टोस्ट, फल और जूस दिया और उन्ही के साथ नाश्ता लेकर बैठ गई।

घड़ी की ओर देखते ही शेखर बोले, “ओ माई गॉड टूडे आई विल बी लेट।” कहकर जल्दी-जल्दी नाश्ता खत्म कर, वे निकल पड़े। उन्हे विदा कर शैला ने डाईनिंग टेबल से प्लेट और गिलास निकाल कर रसोईघर में रख दिया।

घड़ी में 8 बजे थे। तभी दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोला तो आशा बाहर खड़ी थी। उसे देखकर शैला थोड़ा चिढ़कर बोली, “अभी आ रही हो ? इतना कहा था 7 बजे आ जाना, पर तुम्हे तो............” कहकर शैला थोड़ा रूक गई, बोली, “अच्छा छोड़ो ! चलो, पहले बर्तन और झाड़ू कर लो, तब तक मैं खाने का इंतजाम

करती हूँ।" प्रेशर-कूकर में दाल चढ़ाकर, फ्रिज से सब्जियाँ निकालकर किचन के स्लैब पर रख दीं और आशा से दाल और सब्जी बनाने को कहकर नहाने निकल पड़ी। तभी धीमे स्वर में आशा ने कहा,"बीबी जी, वो क्या है न, बच्चों की परीक्षा चल रही है, इसलिए घर का काम कर, उन्हें अच्छे से नाश्ता खिलाकर 6:30 बजे स्कूल में छोड़कर आयी। फिर उनके बाबा बोले, कि उन्हे आज आने में देर हो जाएगी, तो उनका भी तैयार कर साथ दे दी। क्या करूँ बीबी जी इसलिए देर हो गई।"

आशा की बातें सुनकर शैला हैरान हो गई। सोचने लगी, जरा इसे देखो, पूरे घर का काम, पति बच्चों के लिए खाना बनाकर आयी है और यहाँ घरों का काम खत्म कर घर वापस जाएगी, और मैं इसके समय पर न आने से परेशान। सोचते-सोचते शैला बाथरूम की तरफ निकल गई। 09:30 तक उसका नहाना, कपड़े और पूजा भी हो गई थी। आशा ने भी करीब-करीब सारा काम खत्म कर लिया था। दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोलते हुए आशा ने कहा, बीबी जी, पड़ोसवाली मैडमजी आयी है। शैला ने देखा, सामने नेहा खड़ी थी।

शैला और नेहा पक्की सहेलियाँ थीं। उनके पति एक ही दफ्तर में काम करते थे। शैला को देखते ही नेहा ने कहा, "अरे अभी तक तैयार नहीं हुई, 10 बजने वाले हैं?"

"जस्ट गिव मी फाइव मिनिट्स, मैं अभी आती हूँ," कहकर शैला बैडरूम में गई, साड़ी पहनी, थोड़ा हल्का से मेकअप किया और ठीक 5 मिनट में बाहर आ गयी।

"अरे वाह! तुम तो वाकई में 5 मिनट में तैयार हो गई," मुस्कुराते हुए नेहा बोली। तभी आशा आयी और बोली, "बीबी जी, दाल-चावल और सब्जी बन गई है। चिकन की सब्जी भी मैने गर्म करने के लिए माइक्रोवेव में रख दी है।"

"अच्छा ठीक है, तुम बाहर कपड़े डाल दो और पीछे का दरवाजा बंद करके आ जाओ," कहकर शैला निकल आयी तो आशा भी जाने के लिए तैयार थी। शैला ने कहा, "जरा रूको आशा, ये लो।" उसके हाथ में फ्रीज से निकालकर एक मिठाई का डिब्बा दिया और साथ में दो सौ रूपये भी थमा दिए।

"ये किसलिए बीबी जी?," आशा ने पूछा।

"अरे ये कुछ नहीं, कल होली है ना,उसके लिए बच्चों के मिठाई और कुछ पैसे उनके रंगों के लिए। होली रंगों का त्यौहार है न, इसलिए तुम भी अपने जीवन में खुशियों के रंग बिखेर लेना," मुस्कुराते हुए शैला ने कहा।

आशा की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। इससे पहले वह कुछ कहती, शैला ने कहा, "अच्छा मैं चलती हूँ, कल समय पर आ जाना।"

नेहा चुपचाप सबकुछ देख रही थी। आशा के जाते ही बोली, "तुम न, इसे बहुत ज्यादा सर पर चढ़ा कर रखती हो।"

"देखो नेहा, मैने ऐसा भी कुछ काम नहीं किया है। मिठाई उसके बच्चे हमारे बच्चों से खुशी से खाएँगे। जरा सोचो, हम एक बार पार्लर जाकर 1500 रुपये बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं, पर एक कामवाली बाई जो चंद पैसों के लिए घर-घर घूमकर जूठे बर्तन साफ करती है, हमारा घर चमकाती है, जिसके न आने पर हमारा सारा काम ठप्प हो जाता है, क्या हम उसे त्योहारों पर उसकी खुशी के लिए दो सौ रुपये नहीं दे सकते। यही समझो मैने अपनी खुशी के लिए उसे ये दो सौ रुपये दिए। अब चलो भी, क्लब के लिए देर हो रही है।" चेहरे पर एक स्निग्ध मुस्कान लिए, शैला बाहर खड़ी अपनी गाड़ी में बैठ गई। नेहा उसे अपलक देखे जा रही थी।

शाश्वती महांति

भुवनेश्वर

सँवरना

शरीर ईश्वर कि देन है जिसे सँवारना,
मुझे अच्छा लगता है।
जब से होश आया माँ को सँवरना देख़,
मुझे अच्छा लगता है।
धरती का बसंत ऋतु में रंग बिरंगो फूलों से सँवरना देख,
मुझे अच्छा लगता है।
आकाश में सतरंगी इन्द्रधनुष का सँवरना देख,
मुझे अच्छा लगता है।
माँ दुर्गा को लाल जोड़े में सँवरकर नवरात्रि पर विराजमान होते देख,
मुझे अच्छा लगता है।
सजना-सँवरना श्रृंगार करना स्त्रियों का एक गहना, जिसे देख,
मुझे अच्छा लगता है।
रंग-बिरंगे कपड़े पहन खुद को निहारना,
मुझे अच्छा लगता है।
बच्चों को सँवारना
मुझे अच्छा लगता है।
सजना सँवरना एक कला है जिसे सीखना,
मुझे अच्छा लगता है।
आत्मा को सभी सत कर्मो से सँवारना
मुझे अच्छा लगता है।

वी. अनुराधा
विशाखापट्टणम

गुब्बारे वाला

गुब्बारे वाला, बेचता है
गुब्बारे और बेचता है,
उस रूप में,
अपनी भूख, अपनी गरीबी,
अपने साँस को,
सिकोड़कर फेफड़े को अपने,
बेचता है, अपनी जिंदगी,
खड़े-खड़े, घूमकर और थककर बैठकर
बाँस की छड़ी से बाँधे
बेचता है,
अपने परिवार के अरमान को,
बच्चों की ख्वाहिशों को,
दूसरे बच्चों की मुस्कान,
में अपने बच्चों के सूखे होंठों
और पिचके चेहरे की,
मासूमियत से पूछे जाने वाले
सवाल के जवाब को,
जिसमें स्कूल, उनके मेले,
उनके खुले बदन के अनगिनत,
सवालों से जूझते उत्तर ढूँढ़ता,
गुब्बारे वाला बेचता है,
गुब्बारे कई रंगों के,
कई अरमानों की डंडियाँ लगाए,
और अपने एहसास के,
धागे से बाँधकर गुब्बारा,
बेचते हुए अपने एहसासों,
को संजोने की कोशिश में,
बेचता है, गुब्बारे वाला,
गुब्बारा,
पर शायद ही खरीद पाता है,
अपने परिवार की हर जरूरत को,
बेचकर अपनी साँसें।

सोनी पाण्डेय
भुवनेश्वर

Happiness !

What is Happiness?

Does it lie in material comfort, wealth and riches? If it is so, how does a rich man mourn in his palatial building and a daily wage earners sings and dance with overwhelming happiness and excitement. Does it lie in enjoyment of objects? Infact, pleasure derived from all our sense organ is momentary.

So, where can I find everlasting happiness and bliss? Happiness is virtually a state of mind. It possibly lies within the state of mind, which remains unaffected, stable and powerful under all situations of sorrow or joy, loss or gain, honor or dishonor, praise or blame, insult or respect.

Let us have look at few recipes by which we can practice Happiness!

Recipe for Happiness:

1. First of all, we need an attitude to lead a happy life. Let us be grateful to God for all that we have by his mercy, instead of thinking over what we do not have which many people do. Thinking over what we do not have and comparing with others will only bring stress and tension, depriving us of our happiness.
2. A man with unending and ever increasing ambition, will of course become an unhappy man and loose the flavor of life. Man's never ending struggle for power, position and wealth at times makes him restless, stressed and even tensed. So, there needs to be a limit to human ambition.
3. An attitude of acceptance and less expectation will help one to carry through in the journey of life without worries and irritation. The principle to be adopted in life is to accept life, situation and people as they are. It has to be understand that our life, situation and people with whom I have to deal with, may not always be the way I want them to be. In fact my family members may not be in the way I want to them to be. Then what option do I have? Should I grudge, protest or worry or have tension preparing for my own funeral? My wisest option as is to accept them as they are. Let me accept more and expect less.
4. Some people have a tendency to wonder about over their past, develop unnecessary anxiety for the unseen future and in the process lose out on their happiness in the present. It is rightly said: **Past is history, future is mystery and present is ready cash.** So why not live and enjoy the present. So no regret for the past, no anxiety for the future and to live in the present should be our principle in life.
5. Life always has ups and downs. As a matter of fact, we have many problems and hardships during the journey of life which at times disturb our mind, depriving us of our peace and happiness. We should consider that, our problem or situation is not that bad or great as we think. So, let us look at the people who have greater problems than us and do something for them.
6. To be happy, let us devote a good amount of time to our family and friends, developing and enjoying those relationships. A few friends with a jolly and humorous temperament can make you laugh a lot reducing your stress and tension, if any.
7. Happy people are never self centric and self exclusive. Happy people are always positive and cheerful. They see the bright side of life and expect the best possible outcome from any given situation. Moreover, without physical well being nobody can feel the pleasure of life. So we cannot afford to neglect this body. We have

to keep it fit and fine through various physical exercises. 8. Apart from taking care of our body, we should also pay due attention to our mind. **Sri Satya Sai Baba said: Master the mind, you can be a mastermind**. Human brain is so powerful that even world supercomputer cannot compete. But we should always make a self audit of ourselves and try to eliminate all negative qualities like anger, greed, hatred and jealousy and put into our minds and program in to our conscience positive qualities like love, peace, bliss, purity and divinity.

All in all the thirst for happiness is a common nature in mankind. We are searching for it like a musk deer, who is searching here and there for the smell; though it is coming out from his own navel. We are born to be happy. Happiness is our very nature. It is something we posses within. A person with calm and balance mind, which remains un-affected under all situations and circumstances enjoys, the blessings of over-lasting happiness.

Snehamayee Sahoo
Angul

HOLI
The Festival of Colors

India is often called the land of festivals. Be it Diwali, Christmas or Eid, each festival is celebrated with a lot of pomp and splendor. One such festival which is definitely enjoyed by people of all ages is Holi, which is celebrated not only across the country but also in places outside India.

This festival of colors marks the beginning of spring and is celebrated on the last full moon day of the Hindu calendar. There are many legends associated with why Holi is celebrated. According to one, there was a demon king called Hiranyakashyap who considered himself above everyone, even all the gods and demanded everyone to worship him. This was because he had earned a boon that he could not be killed by any human or animal. But his son, Prahlad was an ardent devotee of Lord Vishnu. Angered by his son, Hiranyakashyap ordered his sister, Holika to sit in the blazing fire with Prahlad as she had a boon making her immune to fire. But being Lord Vishnu's devotee, Prahlad came out unscathed, while Holika burned. Since then, people started celebrating the victory of good over evil on the eve of Holi by lighting a bonfire called 'Holika'.

While the bonfire on the night before, Holika Dahan, has a religious element, the day of the color fest isn't really a religious ceremony. It's purely about having fun within the community by taking to the streets or attending private celebrations to smear colors at each other. The colors are each said to symbolize something different. Blue is for Krishna, a Hindu God portrayed with blue skin. Green is symbolic of rebirth and new beginnings. Red is the color of marriage and can symbolize matrimony or fertility. And yellow, the color of turmeric, is often used on auspicious occasions.

It is said the spirit of Holi encourages the feeling of brotherhood in the society and even enemies turn into friends on this auspicious occasion. People of all communities and religions participate in this joyous and colorful festival and strengthen the secular fabric of the nation.

Sarita Panda
Bhubaneswar

ସ୍ୱପ୍ନ ନୂତନ ବର୍ଷର

ରାତ୍ରିର ସେଇ ଘନ ଅନ୍ଧକାର ଚିରି,
ନୂତନ ସୂର୍ଯ୍ୟ ନୂତନ ସ୍ୱାକ୍ଷର ନେଇ,
ଏ ସାରା ଜଗତେ ସମତାର ରେଣୁ ବିଞ୍ଚି,
ନୂଆ ବରଷର ପହିଲି କିରଣ ଅଭିନନ୍ଦନ ଦିଏ।
କେତେ ସମ୍ପର୍କ ଭଙ୍ଗାଗଢ଼ା ହୁଏ ଏଠି,
ବାଲିଘର ପରି ନିମିଷକେ ହୁଏ ଚୂର୍ଣ୍ଣ।
ଗର୍ବ, ଦମ୍ଭର ବାଟ ଚାଲୁଚାଲୁ ଅବା
ବ୍ୟର୍ଥତାରେ ବି ଜୀବନ ଭରିଯାଏ।
ତଥାପି ନୂଆ ସକାଳରେ ନୂତନ ଆଶା ଜାଗେ,
ଏଇ ନୂଆ ବରଷର ପହିଲି କିରଣ ଅଭିନନ୍ଦନ ଦିଏ
କେତେ ନୂଆ ଆସି ପୁରୁଣା ହେଲାଣି
କେତେ ଦିନ ମାସ ଆଉ ବର୍ଷ ବିତି ତ ଗଲାଣି
କେତେ ଆଜି ପୁଣି କାଲି ହୋଇଯାଏ ଏଠି
ଅନ୍ଧାରରେ ବି ଆଲୋକ ଖୋଜିବା ପୁଣି
ତଥାପି ନୂଆ ବରଷର ପହିଲି କିରଣ ଅଭିନନ୍ଦନ ଦିଏ
ଧନୀ, ଗରିବର ସୀମାରେଖା ଭୁଲି
ମଣିଷ ପଣିଆ ଜାଗ୍ରତ କରି ଆଗକୁ
ଆହୁରି ଆଗକୁ ମାଡ଼ିଯିବା ଚାଲି
ବିଗତ ଦିନର ଦୁଃଖ, ଅପ୍ରାପ୍ତିକୁ ଏଇଠି ଛାଡ଼ି,
ନୂତନ ଉନ୍ମାଦନା ଜୀବନରେ ଭରି
ନୂଆ ସ୍ୱପ୍ନକୁ କରିବା ବାସ୍ତବ...
ନୂଆ ବରଷର ପହିଲି କିରଣ ଅଭିନନ୍ଦନ ଦିଏ।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଲବଙ୍ଗି

ଲବଙ୍ଗି ଜଙ୍ଗଲ ରେ ଫଗୁଣର ସକାଳଟା,
ପାହାଡ଼ ଉପରୁ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗ ର ସବୁଜ ପ୍ରକୃତିଟା।
ମରି ମରି ଯାଉଥିବା ଉଦାସୀ ମନଟା ଚାହିଁଥିଲା,
ଆଉ ଶାଗୁଆ ଶାଢ଼ିରେ ଲବଙ୍ଗି ଖାଲି ହସୁଥିଲା।
ତା ମୁହଁକୁ ଚାହିଁ ରହିଥିଲି ନିର୍ବାକ ହୋଇ,
ଏତେ ସଜ ହୋଇ ସିଏ ହସୁଛି କାହା ପାଇଁ ?
ବାଉଁଶ ବୁଦାର ସରୁ ସରୁ ପତ୍ର ହଲାଇ ଡାକିଲାପାଖକୁ,
ଅନେକ ଆସ୍ୱାଶନା ଦେଇ ବୁଝାଇ ଦେଲା ଅବୁଝା ମନକୁ।
ବହୁତ ଦିନରୁ ଟିକିଏ ନରମ ସମବେଦନା ପାଇଁ,
ବୋଧେ ମନଟା କାନ୍ଦୁଥିଲା କଇଁ କଇଁ ହୋଇ।
ଲବଙ୍ଗି ରାଣୀର ହାତଧରି ହସି ହସି କହିଗଲା
ଯେତେ କଥା ମନ ଭିତରେ ଚୁପ୍ ଚାପ୍ ରହି ଯାଇଥିଲା।
ଡାକିନେଇ ଦେଖାଇଲା ତାର ମନର ସାଥିକୁ
ଯାହା ଇଶାରାରେ ଧରିଛି ଏ ଅପୂର୍ବ ଶୋଭାକୁ ।
ଇଶ୍ୱରଙ୍କୁ ଧନ୍ୟବାଦ ଦେଉଥିଲି ମନେ ମନେ,
ପ୍ରେମର ଝଙ୍କାର ବାଜୁଥିଲା କାନେ କାନେ।
ମନଟି ଦୋହଲି ଗଲା ପିଲାଟିର କାନ୍ଦରେ,
ଭୋକିଲା ଗରିବ ପିଲାଟି ଭିଜୁଥିଲା ରକ୍ତରେ।
ବିଧାତାର ମନ ମାନିଲାନି ଭୋକିଲା ଲୁହରେ,
କନ୍ଦାଇଲା ତାକୁ ପୁଣି ମୁଣ୍ଡଫଟା ରକ୍ତରେ।
ଟିକିଏ ସେବା ପାଇ ପିଲାଟି ଶାନ୍ତ ହୋଇଗଲା,
ନିର୍ବିକାର ପ୍ରସନ୍ନ ଚିତ୍ତରେ ବସି ଚାହିଁଥିଲା।
କି ଧୈର୍ଯ୍ୟ, କି ସାହସ, କ୍ଷଣକେ ଦୁଃଖ ଭୁଲିଗଲା,
ମୋ ମନର ଦୁର୍ବଳତା, ଖୁବ୍ ଗରୀବ ମନେକଲା।
ବସରେ ଚଢୁ ଚଢୁ ଇଶ୍ୱରଙ୍କୁ ପୁଣି ଧନ୍ୟବାଦ ଦେଉଥିଲି,
ଲବଙ୍ଗି କୁ ବିଦାୟ ଦେଇ ନାଲ୍କୋ କୁ ଆଗେଇଲି।

କମଳ ସାହୁ
ଅନୁଗୁଳ

ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ଡେ

-ଏ ଶୁଣୁଛ ? ଶୋଇ ପଡ଼ିଲଣି ନା କଣ ?

-ନା, କୁହ । କିନ୍ତୁ ନିଦ ମାଡ଼ିଲାଣି । ଭାରି ଟାୟାର୍ଡ ଲାଗୁଛି । ଅଫିସ୍‌ରେ ଇନିସ୍ପେକ୍ସନ୍ ଥିଲା ଜାଣିଛ ତ । କଣ କହିବା କିଛି ଜରୁରୀ.....

- ହଁ ହଁ ଦରଖାସ୍ତ ଦେବି, ଚାକିରି କରିଛି ତ ତମ ଅଣ୍ଡରରେ ସବୁବେଳେ ଖାଲି ଅଫିସିଆଲ୍ ଲାଙ୍ଗୁଏଜ୍। ଟିକେ ତ ରୋମାଣ୍ଟିକ ହୁଅ । କମ୍ ସେ କମ୍ ଆଜି ପରି ଦିନରେ....

- କାହିଁ ? ଆଜି କି ଦିନ କି ?

ଧଡ଼ କରି ଉଠିପଡ଼ି ମାଧୁରୀ ଚଦର ଟା ଟାଣିନେଲା ପ୍ରକାଶର ଦେହ ଉପରୁ ।

- ଆରେ ଆରେ କଣ ହେଲା ? ଚମକି ପଡ଼ିଲା ପ୍ରକାଶ ।

-କି ଦିନ ପଚାରୁଚ ଆହୁରି ? ଲାଜ ଲାଗୁନି ? ଆଖିକାନ କାମ କରୁଛି ନା ସେସବୁ ବି ଅକାମୀ ହୋଇଗଲାଣି ? ସାରା ସହର ପଡୁଛି ଉଠୁଛି ଭାଲେଣ୍ଟରଇନ୍ ଡେ ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ଡେ । ରୋଜ୍, ଚକୋଲେଟ୍, ଟେଡି, ହଗ୍, କିସ୍, ସବୁ ଗଲାଣି, ମୁଁ ଚୁପ୍ ରହିଛି । ଆଜି ତ ଟିକେ ମନେପକେଇଥାନ୍ତ ! !

-ହଁ ଯେ, କିନ୍ତୁ କଣ ସେ ପାଗଳ ପରି ଏ ଡେ, ସେ ଡେ ମନଉଛ ତମେ ମାନେ, ବାର ପ୍ରକାର ଟେନସନ୍ ଭିତରେ ଇଏ ଆଉ ଗୋଟେ ଟେନସନ୍ । ବୁଝୁନ କିଛି । ପିଲାଙ୍କ ପରି ହଉଛ ।

ମାଧୁରୀ ଚିହିରି ଉଠିଲା ଏଥର....

ସାଙ୍ଗସାଥୀମାନଙ୍କ ସାଙ୍ଗେ ସାହି ପଡ଼ିଶା ଘରକୁ ଗଲେ ନା ଜାଣିବ ଭଲପାଇବା କେମିତି ? ଦେଖିବ ଯାଅ.. ସୁରଜ୍ ବାବୁ ପ୍ରତିଦିନ କେମିତି ଗୋଲାପ ଫୁଲ ତୋଡ଼ା ଦେଉଛନ୍ତି ପ୍ରୀତିକୁ, ସେ ବି ବିଭିନ୍ନ ରଙ୍ଗର । କେକ୍, ଟେଡି, ଗିଫ୍ଟରେ ଭରି ଗଲାଣି ତା ଘର । ହଁ ତମ ପାଇଁ ଯୋଉ କବିତା ଲେଖିଥିଲି, ଫେସବୁକ୍‌ରେ ପଢି ଦୁନିଆଁ ଲୋକ ପ୍ରଶଂସା କରୁଛନ୍ତି, କେତେ ସୁନ୍ଦର ସୁନ୍ଦର କମେଣ୍ଟ ଦେଉଛନ୍ତି, ତମେ ଗୋଟେ ଲାଇକ୍ ବି ଦେଇପାରୁନ ? ଗୋଟେ ଆଙ୍ଗୁଠି ଦେଖାଇବାକୁ ଟାଇମ୍ ନାହିଁ ତମ ପାଖରେ ?

-ବିଚାରା ପ୍ରକାଶ ର ପାଟି ଖନି ମାରିଗଲା । କାଲି ଭାବୁଥିଲା ପଢ଼ିବ ବୋଲି, ଦୁଇ ଲାଇନ ପରେ କଣ ଗୋଟେ କାମ ପଡ଼ିଲା ଭୁଲିଗଲା ସେକଥା । ତଥାପି ସାହସର ସହ କହିଲା- ହଁ ପଢ଼ିଛି, ଚାନ୍ଦ, ଫଗୁଣ, ଜହ୍ନ ଇତ୍ୟାଦି । ଯାହା କହିବା କଥା ସିଧା ନକହି ଏତେ ବୁଲେଇ ବଙ୍କେଇ ପ୍ରେମ ଭାଷା ମତେ ଭଲ ବୁଝା ପଡ଼େନି । ଧୈର୍ଯ୍ୟ ବି ନାହିଁ ସେସବୁ ବୁଝିବାକୁ ।

ପ୍ରକାଶ ଉଠିବା ଆଗରୁ ମୁହଁ ଛିଞ୍ଚାଡ଼ି ଉଠିଗଲା ମାଧୁରୀ ଦୁମ୍ ଦୁମ୍ ହୋଇ । ହଜାରେ କାମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ପୁଅକୁ ଉଠା, ବ୍ରସ୍, ଗାଧୁଆ ଝିଅର ମୁଣ୍ଡ କୁଣ୍ଡା, ଜଳଖିଆ ତିଆରି ଏମିତି କେତେକଣ ।

ଟିଫିନ୍ ଡବା ପିଲାଙ୍କ ବ୍ୟାଗ ରେ ପୁରେଇ ସେମାନଙ୍କ ହାତକୁ ଭିଡ଼ି ଭିଡ଼ି ଧରି ଚାଲିଗଲା ସ୍କୁଲବସ୍‌ରେ ଛାଡ଼ିବାକୁ । ଗର୍ଜନ କରି କହିଲା ଜଳଖିଆ ନିଜେ ଆଣି ଖାଇଦେବ, ନିଜେ ଡ୍ରେସ୍ ଆଇରନ୍ କରି ପିନ୍ଧିବ । ଗଲାବେଳେ ଚାବି ପଡ଼ିଶା ଘରେ ଦେଇଦେବ । ମୁଁ ଡେରିରେ ଆସିବି । ଧନ୍ୟରେ ସ୍ୱାମୀ ମୋର ପୋଡ଼ା କପାଳ । ଢୋ କରି କବାଟ ବନ୍ଦ କରି ଦେଲା ମାଧୁରୀ ବାହାରୁ ।

ସ୍କୁଲ୍ ବସ୍ ଗଲାପରେ, ଫେରିବା ବାଟରେ ପ୍ରୀତି ଘରେ ପଶିଗଲା । ଚା ପିଇଲା ବେଳେ ଘର ସାରା ଆଖି ବୁଲେଇ ଆଣିଥିଲା ମାଧୁରୀ । କି ସୁନ୍ଦର ଗୋଲାପ ବୁକେ ସବୁ ବେଡ଼ରୁମ୍, ଡାଇନିଂ ରୁମ୍, ଡ୍ରଇଂ ରୁମ୍‌ରେ । କାନ୍ଥ ସାରା ସୁରଜ ପ୍ରୀତି ସହ ନିବିଡ଼ ମୁହୂର୍ତ୍ତମାନଙ୍କୁ ଫ୍ରେମ୍ କରି ସଜେଇ ରଖିଛି ସେ । ପ୍ରେମର ସାଗରରେ ବୁଡ଼ି ରହିଛନ୍ତି କହିଲେ ଠିକ୍ ହେବ ।

-ଗମ୍ଭୀର ସ୍ୱରରେ ପଚାରିଲା ମାଧୁରୀ ଆଜି କଣ ଗିଫ୍ଟ ମିଳିଛି ତତେ ସୁରଜ୍ ବାବୁଙ୍କ ଠାରୁ ?

-ଆରେ ୟାର.... ହି ଇଜ୍ ସଚ୍ ଏ ରୋମାଣ୍ଟିକ ପର୍ସନ... ହି ଲଭସ୍ ମି ସୋ ମଚ୍ । ରାତି ବାରଟାରେ କେକ କଟିଂ, ଦେନ୍ ବୁକେ, ଦେନ୍ ମ୍ୟୁଜିକ୍ ଡାନସ୍, ଦେନ ବନାରସୀ ଶାଢ଼ୀ ନାଇଟ୍

ଗାଉନ୍....

-ଆଜି କୁଆଡ଼େ ଯିବୁନି ବୁଲି ତାଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ?

-ଆରେ ନା ନା... ଏମରଜେନ୍ସି ମିଟିଂ ରେ କଲିକତା ଗଲେ ଏଇ ଘଣ୍ଟାଏ ଆଗରୁ। ହାଇ ପୋଜିସନ୍.... ହାଇ ପ୍ରୋଫାଇଲ୍...

-ବାସ୍ ବାସ୍... ବାହାରି ଆସିଲା ମାଧୁରୀ ସେଠୁ ବିନା ବାକ୍ୟବ୍ୟୟରେ।

କେମିତି ଦିନଟା କଟିବ ଆଜି ? ଘରେ ଶ୍ୱାସ ରୁଦ୍ଧ ହେଲା ପରି ଲାଗୁଛି।

ପିଲାମାନେ ଫେରିଲା ପରେ ତାଙ୍କୁ ନେଇ ରାମ ମନ୍ଦିରକୁ ଗଲା ମନ ଶାନ୍ତି କରିବାକୁ। ପ୍ରଭୁ ! ଆଜି ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ଡେ ରେ କିଏ ପାର୍କ, କିଏ ହୋଟେଲ୍ ତ କିଏ ସିନେମା ଘରେ। ମୋ ସ୍ୱାମୀଙ୍କୁ ଟିକେ ହେଲେ ସେ ଗୁଣ ଦେଲେନି ? ଛୁଆ ମାନଙ୍କୁ ଦେଖି ଦୟା ଲାଗିଲା। କେକ୍ ଖୁଆଇବାକୁ ସାମ୍ନା ହୋଟେଲକୁ ନେଇଗଲା। ହେ ଭଗବାନ୍ ! ! ଚାରିଆଡ଼େ ଯୋଡ଼ି ଯୋଡ଼ି ପୁଅଝିଅ। ସ୍ୱାମୀ ସ୍ତ୍ରୀ ତ ଆଜିକାଲି କିଏ ଜଣାପଡୁନାହାନ୍ତି। ମିଞ୍ଜି ମିଞ୍ଜି ଆଲୁଅରେ କିଛିବି ଦିଶୁନି। କଣ ଖୁଆଇବ ପିଲାଙ୍କୁ ? ଆଜି ସବୁ ବର୍ବାଦ୍। ବଡ଼ କଷ୍ଟରେ ଦୁଇଟା କେକ ଆଣି ଗୋଟେ ଜାଗାରେ ତିନିହେଁ ବସିଗଲେ। ଦୁଇଟି ଟେବୁଲ୍ ଛାଡ଼ି ସୁନ୍ଦରୀ ଝିଅଟିଏ, ଅତ୍ୟାଧୁନିକ ଡ୍ରେସ୍ ପିନ୍ଧି ପୁରୁଷ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ସହ ହସି ହସି ଡ୍ରିଙ୍କ କରୁଛି। ଖୋଲା କେଶକୁ ବିଛେଇଦେଇ ବନ୍ଧୁଟି କାନ୍ଧରେ ଅଜାଡ଼ି ହେଉଛି। ଏତେ ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ! ! ! ଛି ଛି, ପିଲାମାନେ ନଦେଖନ୍ତୁ।

ହଠାତ୍ ଲାଇଟ୍ ଟା ପରିଷ୍କାର ହୋଇ ଜଳି ଉଠିଲା।

ପୁଅଟି ପାଟି କରି ଉଠିଲା... ମାମା ! ! ! ସୁରଜ୍ ଅଙ୍କଲ୍। ଗୋଟେ ନୂଆ ବିଉଟିଫୁଲ ଆଣ୍ଟି ସାଙ୍ଗରେ। ପ୍ରୀତି ଠାରୁ ଯଥେଷ୍ଟ ସାନ ହେବ ବୟସରେ। ମାଧୁରୀ ଦେଖୁଥିଲା, ସୁରଜ୍ ସେ ଝିଅକୁ ଗିଫ୍ଟ ସହ ବିରାଟ ଫୁଲତୋଡ଼ା ଦେଇ ନିଜ ଆଡ଼କୁ ଆଉଜାଇ ଆଣୁଥିଲା। ହେମାଳ ହୋଇଗଲା ପାଦ ତାର। ଥରଥର ଛାତିକୁ ସମ୍ଭାଳି ନପାରି ମୁହଁ ତଳକୁ କରି ବସି ରହିଲା କିଛି ସମୟ ସେଠି।

ଘରକୁ ଫେରିଲା ବେଳକୁ ପ୍ରକାଶ ବସିଥିଲା ବାହାରେ, ଅନ୍ଧାରରେ ସିମେଣ୍ଟ ଚେୟାର ଉପରେ ବିଚରା । ଘର ତାଲା ପଡ଼ିଛି। କୁକୁର ମାନେ ଏପଟ ସେପଟ ହୋଇ ଭୁକୁଥିଲେ। ବାବା.... ଡାକି ପିଲାଏ ଦୌଡ଼ି ଗଲେ।

-ଆଜି ଏତେ ଶୀଘ୍ର କେମିତି ଚାଲି ଆସିଲ ଅଫିସ୍ ରୁ ?

ପୁଅକୁ କାଖେଇ, ଝିଅର ହାତ ଧରି ପ୍ରକାଶ କହିଲା, ଜଲଦି କବାଟ ଖୋଲ। ମଶା କାମୁଡ଼ିଲେଣି।

ରାତି ବାରଟା ବାଜିଲା ସବୁ କାମ ସାରି, ମଶାରୀ ଟାଣି ଶୋଇବା ବେଳକୁ। ପ୍ରକାଶ ପଚାରିଲା ମୁରୁକି ହସି....

-କୁଆଡ଼େ ଯାଇଥିଲ କି ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍‌ଡେ ମନେଇବାକୁ ? ଏଇ ନିଅ। ଗୋଟିଏ ମାତ୍ର ନାଲି ଗୋଲାପ ଆଣିଛି। ୫୦ଟଙ୍କା ନେଲା।ଗୋଲାପ ଟିକୁ ଖୁସିରେ ଝାମ୍ପିନେଇ ମୁଣ୍ଡ ଦେଖାଇ ଖୋଷି ବାକୁ କହିଲା। ମାଧୁରୀ ର ଲମ୍ବା ବେଣୀରେ ଫୁଲ ଖୋଷୁ ଖୋଷୁ ପ୍ରକାଶ ପଚାରିଲା-

-ଆଉ କିଛି କବିତା ଲେଖୁଛ ନା ନାହିଁ ? ବୁଲିପଡ଼ି ତା ଗଳାରେ ହାତ ଘେରେଇ ଫିକ୍ କିନା ହସି ଦେଇ କହିଲା ମାଧୁରୀ...

-ହଁ ଲେଖୁଛି ନା ! ! ! ଏକଦମ୍ ସିଧାସାଧା...

-ତୁମେ ଦେବତା ମୋର

ତୁମେ ହିଁ ସ୍ୱର୍ଗ ମୋର

ତୁମେ ହିଁ ସାଥି

ତୁମେ ହିଁ ହିରୋ ମୋର।

ହାପି ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ଡେ..... ।

ବନ୍ଦନା ପଣ୍ଡା

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମଧୁମାଳତୀର ପେନ୍ଥା

ମଳୟବାବୁ ଚୁପଚୁପ ଘର ଭିତରକୁ ଆସି ରୋଷେଇ ଘରକୁ ପଶିଲେ । ଧର୍ମପତ୍ନୀ ବାସନ୍ତି ଗାଜର ହାଲୁଆ ତିଆରି କରୁଥିଲେ । ଧିରେ ଧିରେ ଯାଇ ବାସନ୍ତିଙ୍କ ପଛକୁ ଯାଇ ଜୁଡାରେ ବଜାରରୁ କିଣି ଆଣିଥିବା ଲାଲ ଗୋଲାପଟିକୁ ଖୋସିଦେଲେ । ବାସନ୍ତି ହଠାତ ଚମକି ପଡ଼ି ପଛକୁ ଅନାଇଲେ । ଏହି ସମୟରେ ମଳୟବାବୁ ବାସନ୍ତିଙ୍କୁ ନିଜ ଆଡ଼କୁ ଭିଡ଼ିନେଇ ଆଲିଙ୍ଗନ କଲେ ।

ଏ ବୟସରେ ମଳୟଙ୍କର ଏପରି ଦୁଷ୍ଟାମି ଦେଖି ଲାଜେଇଗଲେ । ତାଙ୍କୁ ଠେଲି ଦେଇ ଆଖିଦୁଇକୁ ବଡବଡ କରି ରାଗିବା ଅଭିନୟରେ ଫୁସଫୁସ କହିଲେ 'ପିଲାମାନେ ବଡ ହେଲେଣି, ସମସ୍ତେ ଘରେ ଅଛନ୍ତି, ଏ କ'ଣ କରୁଛ ?'

'କାହିଁକି, କ'ଣ ହେଲା ? ଆଜି ପରା ଭାଲେଣ୍ଟାଇନ୍ ଡେ । ଅସ୍ୱୀକୃତ ଓ ଅବିବାହିତ ପ୍ରେମୀଯୁଗଳମାନେ କାହାକୁ ନ ଡରି ଲାଜ ନ କରି ଗୋଲାପ ଫୁଲ ଦେଇ ଆଜି ପ୍ରେମ ଦିବସ ପାଳନ କରୁଛନ୍ତି । ଆମେ ସ୍ୱୀକୃତିପ୍ରାପ୍ତ ପ୍ରେମୀ ହୋଇ କ'ଣ ଏହା ପାଳନ କରିପାରିବା ନାହିଁ ?'

'ତମେ ଆଉ ଏ ପାଚିଲା ବାଳରେ ଏତେ ରସିକ ହୁଅନା । ପିଲାମାନେ ଦେଖିଦେଲେ କ'ଣ ଭାବିବେ ?'

'କ'ଣ ଭାବିବେ ? ଜାଣିଛ ? ତମ ପାଇଁ ଏ ଗୋଲାପ ଫୁଲଟିକୁ ଆଣିବା ପାଇଁ କେତେ କଷ୍ଟ କରିବାକୁ ପଡିଛି ?'

'ବଜାରରେ ତ ଗୋଲାପ ଫୁଲ ମିଳୁଛି । ତମେ କଷ୍ଟ କାହିଁକି କଲ ?'

'ହଁ ତମେ କାହିଁକି ଜାଣିବ । ଅଫିସରୁ ଆସିଲା ବେଳକୁ ଦୁଇ ଯୁବପ୍ରେମୀ ଫୁଲ ଦିଆନିଆ ହୋଇ ଆଲିଙ୍ଗନ କରୁଥିଲେ । ତାଙ୍କୁ ଦେଖି ମୁଁ ବି ଗୋଟିଏ ଫୁଲ ଆଣି ତୁମକୁ ଦେବାପାଇଁ ଫୁଲ ଦୋକାନକୁ ଗଲି । ସେଠାରେ ଯୁବକ ଯୁବତୀମାନଙ୍କର ଏତେ ଭିଡ଼ ଦେଖି ଦୂରରୁ ଅପେକ୍ଷା କଲି । ଭିଡ କମିବାରୁ ଫୁଲ ଦୋକାନକୁ ଗଲି । କାଳେ କିଏ ଚିହ୍ନା ଲୋକ ଦେଖିଦେବ, ହେଲମେଟ ନ ଖୋଲି ଦୋକାନି ପିଲାଟିକୁ ଗୋଟିଏ ଗୋଲାପ ମାଗିଲି । ସେ ବଲବଲ ହୋଇ ଅନେଇଲା । ବୋଧେ ଭାବିଲା, ଏ ବୁଢ଼ା ଆଜି ଗୋଟିଏ ଗୋଲାପ ନେଇ କ'ଣ କରିବ ? ଭାରି ଲାଜ ଲାଗୁଥିଲା ।'

'ଲାଜ ? ପୁଣି ତୁମକୁ ? ଚବିଶ ବର୍ଷ ତଳେ ଯିଏ ଗାଁ ପରିବେଶରେ ଆମ୍ବଗଛ ଚଢ଼ି ମଧୁମାଳତି ପେନ୍ଥା ତୋଳି ଅବିବାହିତ ଝିଅର ମୁଣ୍ଡରେ ଲଗେଇଦେଇଥିଲା, ତାକୁ ପୁଣି ଲାଜ ?'

ଏ କଥା ଶୁଣି ଦୁହେଁ ସେ ବହୁ ପୁରୁଣା ଘଟଣାକୁ ମନେ ପକାଇ ଭାବପ୍ରବଣ ହୋଇଗଲେ ।

ଏପରିକି ଏକ ଫଗୁଣ ମାସର ଆଦ୍ୟ ବସନ୍ତରେ ରଙ୍ଗବେରଙ୍ଗ ମାଳତୀ ଫୁଲର ପେନ୍ଥା ଆଣି ଯୁବକ ମଳୟ ବାସନ୍ତିକୁ ଉପହାର ଦେଇଥିଲା । ସେଥିପାଇଁ ବହୁତ କଷ୍ଟକରି ଆମ୍ବ ଗଛରେ ଚଢ଼ି ପାଦ ଖଣ୍ଡିଆ କରି ଫୁଲ ପେନ୍ଥାଟିକୁ ତୋଳିବାକୁ ପଡ଼ିଥିଲା ।

ହାଇସ୍କୁଲ ପଢୁଆ ବାସନ୍ତି ବଡଭଉଣୀ ଘରକୁ ମେଲଣ ଯାତ୍ରା ଦେଖିବାକୁ ଆସିଥିଲା । କିଶୋରୀ ବାସନ୍ତି ଆଦ୍ୟ ଯୌବନରେ ପାଦ ଦେଇଥାଏ । ଅର୍ଦ୍ଧ ପ୍ରସ୍ଫୁଟିତ ଗୋଲାପ କଢ଼ିପରି ଚେହେରା ଫୁଟି ଆସୁଥିଲା । ଏ ସମୟରେପାଖରେ ସବୁକିଛି ଥାଇ ମନରେ କ'ଣ ଗୋଟିଏ ଖାଲିଖାଲି ଲାଗେ । ସଦ୍ୟ ପ୍ରସ୍ଫୁଟିତ ଫୁଲଟି ତା ସାଙ୍ଗରେ ଖେଳିବା ପାଇଁ ଗୋଟିଏ ଦୁଷ୍ଟ ପ୍ରଜାପତିକୁ ଖୋଜିଲା ପରି । ମନରେ ଯାହା ଆନ୍ଦୋଳନ ଥିଲେବି ସବୁ ଫୁଲମାନେ କିନ୍ତୁ ବାହାରକୁ ସ୍ଥିର ରହିଥାନ୍ତି । ଆକର୍ଷକ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଓ ମନ ମତାଣିଆ ମହକର ଅଧିକାରୀ ହୋଇବି ବହୁତ ରକ୍ଷଣଶୀଳ ରହନ୍ତି । ବିଚରା ପ୍ରଜାପତି ଆକର୍ଷିତ ହୋଇ ଆସେ ଓ ସବୁବେଳେ ଦୋଷୀ ଭାବରେ ଗଣାହୁଏ ।

କଲେଜ ପଢୁଆ ଯୁବକ 'ମଳୟ'ର ଦୃଷ୍ଟି କିଶୋରୀ ବାସନ୍ତି ଠାରେ ଅଟକି ଯାଇଥିଲା । ବାସନ୍ତି ବି ସ୍ଥିର ହୋଇଯାଇ ପାର୍ଶ୍ୱ ଦୃଷ୍ଟିରେ ସୁଦୃଶ୍ୟ ଯୁବକଟିକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରିଥିଲା ।

ଏହି ପରୋକ୍ଷ ଦୃଷ୍ଟି ଆଦାନ ପ୍ରଦାନରେ ବି ଅନୁଚ୍ଚାରିତ ଭାବେ ବହୁ କଥାଭାଷାର ଦିଆନିଆ ହୋଇଯାଏ, ଯେବେ ଦୁଇଟି ମନର ଭାଷା ଓ ଯୋଗାଯୋଗ ସମଧର୍ମୀ ହୋଇଯାଏ । ଏହା ଏକ ସଂଯୋଗ ମାତ୍ର ।

ପରଦିନ ମଧ୍ୟାହ୍ନରେ ବାସନ୍ତି ବାଡ଼ିପଟରେ ଆନମନା ହୋଇ ଛିଡ଼ାହୋଇ ଆମ୍ବଗଛକୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରିଥିଲା । ଧୀରେଧୀରେ ମଳୟ ବହୁଥିଲା । ଡାଳରେ ଆମ୍ବ କଷିଗୁଡ଼ିକ ଦୋହଲୁଥାଏ । କୋଇଲିଟି ରହିରହି ସୁଲଳିତ ସ୍ୱରରେ ଗୀତ ଗାଇ ସାଥୀକୁ

ଡାକୁଥିଲା। ମାଳତି ଲତାଟି ଆମ୍ବଡାଳେ ମାଡିଥାଏ। ରଙ୍ଗବେରଙ୍ଗ ଫୁଲର ପେନ୍ଥା ଅତି ଆନନ୍ଦରେ ଦୋହଲୁଥାନ୍ତି। ଫୁଲର ପେନ୍ଥାରୁ ମିଠା ବାସ୍ନା ବହିଆସୁଥାଏ।

ମଳୟ ବାସନ୍ତିକୁ ଦେଖିପାରି ବାଆଁରେଇ ହୋଇ ଆସି ପାଖରେ ପହଞ୍ଚିଲା। ପଚାରିଲା 'କୋଇଲିଟା ବହୁତ ମଧୁର ଗାଉଛି ନା ?'

ବାସନ୍ତି ଟିକେ ଘୁଞ୍ଚିଗଲା ଓ କହିଲା, 'ନାଇଁ, ମୁଁ ସେ ଫୁଲକୁ ଦେଖୁଛି। ଭାରି ସୁନ୍ଦର। ବଢ଼ିଆ ବାସୁଛି।'

ମଳୟ ସଙ୍ଗେସଙ୍ଗେ ଗଛ ଉପରକୁ ଚଢ଼ି ପେନ୍ଥାଏ ଫୁଲ ତୋଳିଆଣିଲା। ବାସନ୍ତି ନ ଦେଖିଲା ପରି ଟିକେ ବୁଲି ଛିଡ଼ା ହୋଇଥାଏ। ମଳୟ ପଛପଟୁ ଆସି ମାଳତୀ ଫୁଲ ପେନ୍ଥାକୁ ବଡ ସାହସ କରି ପହିଲି ପ୍ରେମର ପ୍ରଥମ ଉପହାର ସ୍ୱରୂପ ବାସନ୍ତି ଜୁଡାରେ ଖୋସିଦେଲା।

'ଇଏ କ'ଣ ମୁଁ ତ ତୁମକୁ ଫୁଲ ମାଗିନି। ମୋ ମୁଣ୍ଡରେ କାହିଁକି ଖୋସିଲ ? ଏବେ ଅପାକୁ କହିବି ?'

ମଳୟ ସେଦିନ ବହୁତ ଡରିଯାଇଥିଲା। ଏଇଟା ତା'ର ପ୍ରଥମ ଦୁଃସାହସ ଥିଲା। ତଳକୁ ଖସିବା ନଜାଣି ନୂଆ ଉଡ଼ା ଶିଖୁଥିବା ପକ୍ଷୀଶାବକ ପରି ଆକାଶରୁ ଖସି ତଳେ ପଡ଼ିଲା। ଭୟ ଓ ଆଶଙ୍କାରେ ଖର ନିଶ୍ୱାସ ଚାଲୁଥାଏ। ଏତେ ବିପଦଜନକ ହୋଇପାରେ ଏ କାମ ? ଯଦି ଭାଇ ଜାଣିବେ, କ'ଣ ହେବ ? ହେ ଭଗବାନ !

ବାସନ୍ତୀ ତରତର ହୋଇ ସେଠାରୁ ଘର ଭିତରକୁ ଚାଲିଗଲା। ମଳୟର ଏ ବ୍ୟବହାର ପାଇଁ ରାଗିଯିବା ଗୋଟିଏ ଝିଅ ପାଇଁ ସ୍ୱାଭାବିକ। ମଳୟ ଉପରେ ସିନା ରାଗିଗଲା। ମନଟା କିନ୍ତୁ ଛଟପଟ ହେଉଥାଏ। ବିଚରା କେତେ ଭୟରେ ସମୟ କାଟୁଥିବ।

ମଳୟ ଭୟରେ କେତେ କ'ଣ ଭାବିବାକୁ ଲାଗିଲା। ଯଦି ବାସନ୍ତି ରାଗି ଭାଉଜଙ୍କୁ କି ଭାଇଙ୍କୁ କହିଦିଏ କେତେ ଲଜ୍ଜାକର ପରିସ୍ଥିତି ହେବ। ଭାଇ ମାଡ ବି ଦେଇପାରନ୍ତି। ସେ ଦିନଟା ବାହାରେ ଲୁଚିଲୁଚି ବୁଲିଲା। କେହି କାହାରି ସାମ୍ନା ହେଲେନି। ମଳୟର ବଡ ଭାଇଙ୍କୁ ଭାରି ଭୟ।

ବାପା ତ ବହୁଦିନରୁ ଦୁଇ ପୁଅ ବଡ ବିନୟ, ସାନ ମଳୟ ଓ ମାଙ୍କୁ ଛାଡ଼ି ଆରପାରିକୁ ଚାଲିଯାଇଛନ୍ତି। ବଡ଼ ଘର ଓ ବହୁ ଜମିବାଡ଼ି। ବଡଭାଇ ବିନୟ ଏକୁଟିଆ ସବୁ ବୁଝାସୁଝା କରନ୍ତି। ମା'ଙ୍କର କୋଳପୋଛା ପୁଅ ଭାବେ ମଳୟ ଭାରି ଗେହ୍ଲାରେ ବଢ଼ିଛି। ସବୁ ମା'ମାନଙ୍କ ପରି ସାନପୁଅ ପ୍ରତି ଅଧିକ ସ୍ନେହ ଓ ଦୁର୍ବଳତା।

ବାସନ୍ତି ମଳୟର ଭାଉଜଙ୍କର ସାନ ଭଉଣୀ। ଦୁଇ ବର୍ଷ ପୂର୍ବରୁ ମଳୟ ବଡଭାଇଙ୍କ ବିବାହ ହୋଇଛି। ବାହାଘରବେଳେ ବଳୟ ବାସନ୍ତିକୁ ଦେଖିଥିଲା। ସେତେବେଳେ ଛୋଟ ଝିଅଟିଏ ପରି ଦେଖା ଯାଉଥିଲା। ପ୍ରଥମଥର ପାଇଁ ଭଉଣୀ ଘରକୁ ବୁଲିବାକୁ ଆସିଛି ବୋଲି ଘରେ ତାକୁ ସମସ୍ତେ ବହୁତ ଗେହ୍ଲା କରୁଛନ୍ତି।

ମଳୟ ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ଘରକୁ ଫେରିଲା ପରେ ଭାଉଜ ବାସନ୍ତିକୁ ଡାକି କହିଲେ 'ବାସନ୍ତି, ତୁ ମଳୟକୁ କ'ଣ ଚିହ୍ନି ପାରୁନାହୁଁ। ତାଙ୍କ ସହିତ କଥାବାର୍ତ୍ତା ହେଉନାହୁଁ ? ପାଠ ପଢୁଆ ବଡବଡ ପିଲା ହୋଇବି ଲାଜ କରୁଛ ? ଇଏ ଆମ ଘରର ସାନବାବୁ। ମୋର ଏକମାତ୍ର ଓ ଗେହ୍ଲା ଦିଅର। ଭାରୀ ଶାନ୍ତ ଓ innocent ପିଲା।

'Innocent' ଶବ୍ଦ ଶୁଣି ବାସନ୍ତି ମଳୟର ମୁହଁକୁ ଅନାଇଲା। ମନେମନେ କହିଲା 'ଫୁଲଟା ଭଲ ଦେଖାଯାଉଛି ବୋଲି କହୁକହୁ ଯିଏ ଗଛ ଉପରକୁ ଚଢ଼ିଯାଇ ଡାଳ ସହିତ ଫୁଲ ଛିଣ୍ଡାଇ ଆଣି ମୁଣ୍ଡରେ ଖୋସି ଦେଉଛି, ସେ ପୁଣି innocent ପିଲା ? ଅପା ତୁ ଯାଙ୍କୁ ଜମା ଚିହ୍ନିନାହୁଁ।' କିନ୍ତୁ ଅପାକୁ କିଛି କହିପାରିଲା ନାହିଁ।

ମା' ଆସି ମଧ୍ୟ ସେ କଥାରେ ସହମତି ଦେଇ ମଳୟକୁ କହିଲେ 'ଆରେ, ବାସନ୍ତି ଆମର କୁଣିଆ। ଭଲ ସୁଧାର ଝିଅଟି। ତାକୁ ଆଦର ସତ୍କାର ନ କଲେ କ'ଣ ଭାବିବ ?'

ମଳୟ ଗୋଟିଏ ସତସତିକା innocent ପିଲା ପରି କାନ୍ଥ ଆଡକୁ ଅନାଇ ଥାଏ।

ତା ପରଦିନ ଗାଁ ଦୋଳ ମେଳଣ। ସରଳ ଗ୍ରାମୀଣ ଜୀବନ ଉତ୍ସବମୁଖର ହୋଇଉଠିଲା। ବାସନ୍ତି ପଡିଶା ଘରର ଅନ୍ୟ ଝିଅମାନଙ୍କ ସହିତ ମେଳଣ ଦେଖିବାକୁ ବାହାରିଲା। ନୂଆ କୁଣିଆ ବାସନ୍ତିକୁ ସାଙ୍ଗରେ ନେଇ ମେଳଣ ବୁଲାଇବା ଦାୟିତ୍ୱ ବଡ଼ଭାଇ ମଳୟକୁ ଦେଲେ। ମଳୟ ନାହିଁ କରିବାକୁ ଚାହିଁ ମଧ୍ୟ ଭାଇଙ୍କୁ କିଛି କହିପାରିଲା ନାହିଁ। ଭାଉଜ କହିଲେ 'ସାନବାବୁ, ବାସନ୍ତି ଏଠାରେ ନୂଆ। ତା'ର ପାଖେପାଖେ ରହିବ।'

ପଡ଼ିଶା ଝିଅମାନଙ୍କ ସହିତ ସେ ଭଲ ଭାବେ ମିଶିନାହିଁ। ଭଲଭାବେ ନ ମିଶିଥିଲେ ବି ମଳୟ ତାଙ୍କ ଘରର ବନ୍ଧୁ ଓ

ଅପାର ଦିଅର। ଅପା ତାଙ୍କୁ କେତେ ଭରସା କରୁଛି। ମେଲଣ ପଡ଼ିଆକୁ ଗଲାବେଳେ ମଳୟ ଟିକେ ଦୂରେଇ ଦୂରେଇ ରହିବା ଦେଖି ବାସନ୍ତି ପଛକୁ ଅନାଇ ଟିକେ ଅଟକି ଯାଏ। ଏହା ଦେଖିଲା ପରେ ମଳୟ ମନରେ ଟିକେ ସାହସ ସଞ୍ଚୟ ହେଲା।

ମେଳନ ପଡ଼ିଆରେ ବାଜା, ବାଣ, ଆଲୋକମାଳାରେ ସଜ୍ଜିତ ଦୋଳ ବିମାନଗୁଡ଼ିକର ପଟୁଆର ଦର୍ଶନୀୟ ଥିଲା। ଦୋଳ ବିମାନରେ ରାଧାମାଧବ ମୂର୍ତ୍ତି ଯୁଗଳ ଝୁଲିବାବେଳେ ଦୁଇଟି କିଶୋର ମନ ମଧ୍ୟରେ ପରସ୍ପରର ଛବି ଖେଳୁଥାଏ। ସୁସଜ୍ଜିତ ଦୋକାନରେ ବହୁ ମନୋହରି ସାମଗ୍ରୀର ମେଳା। ସବୁଠି ମିଳୁଥିବା ସାଧାରଣ ଜିନିଷସବୁ ମେଳନ ଯାତ୍ରାରୁ କିଣିବାରେ ଗୋଟିଏ ମଜ୍ଜାଥାଏ। ଏଠୁ କିଛି ଜିନିଷ କିଣି କାହାରିକୁ ଉପହାର ଦେବା ଗୋଟିଏ ସୁଯୋଗ ଓ କାହାକୁ ଉପହାର ଦେବାପାଇଁ ସୁଯୋଗ ଦେବା ମଧ୍ୟ ମଧୁର ସ୍ମୃତି ମନ୍ଥନ ପାଇଁ ଭଲ ମାଧ୍ୟମ। ବାସନ୍ତି ଗୋଟିଏ ଦୋକାନ ପାଖରେ ଅଟକି ଜିନିଷ ସବୁ ଦେଖିଲା। ମଳୟ ଗୋଟିଏ ଭଲ ଭ୍ୟାନିଟି କିଛି ବାସନ୍ତି ହାତକୁ ବଢ଼ାଇବାରୁ ସେ ଗ୍ରହଣ କଲା। ଏବେ ମଳୟ ନିଶ୍ଚିତ ହେଲା ଯେ ପାଣିପାଗ କିଛି ବିଗିଡ଼ି ନାହିଁ। ଦୁହେଁ ଅନ୍ୟ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ପଛରେ ଛାଡ଼ି ସକାଳୁ ଘରକୁ ଫେରିଲେ।

ଭଇ ଓ ଭାଉଜ ବାହାର ବାରଣ୍ଡାରେ ଅନାଇ ଥିଲେ। ଭାଉଜ ଦୁହିଁଙ୍କୁ ଦେଖି ଖୁସିହେଲେ ଓ ଭାଇଙ୍କୁ କ'ଣ ଗୋଟିଏ ଚୁପକରି କହିଦେଲେ। ଭାଇ ତାଙ୍କର ଗାମ୍ଭୀର୍ଯ୍ୟ ଭାଙ୍ଗି ଟିକିଏ ହସିଦେଲେ।

ସେ ଛୁଟି ସପ୍ତାହଟା ଦୁଇ କିଶୋର ବନ୍ଧୁ ତାଙ୍କର ବଡ ଘର ଅଗଣା ଓ ବାଡ଼ିପଟ ବିସ୍ତୃତ ବଗିଚାରେ ଖୁସି ମଜ୍ଜାରେ କାଟିଲେ। ମା' ବାସନ୍ତିର ସରଳ ସମ୍ଭ୍ରମ ସ୍ୱଭାବ ଓ ଭଦ୍ର ବ୍ୟବହାରରେ ଭାରି ପ୍ରୀତ ହେଲେ।

ଏବେ ବାସନ୍ତିର ଘରକୁ ଫେରିବାର ସମୟ। ଭାଇଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ଘରକୁ ଫେରିଲାବେଳେ ମା' ଓ ଭାଉଜ ତାକୁ ଦାଣ୍ଡରେ ବଳେଇ ଦେଲାବେଳେ ସେ ମଳୟକୁ ଚାହିଁଲା। ମଳୟ ସେ ନିଶବ୍ଦ ଭାଷାକୁ ବୁଝିପାରିଲା 'ପୁଣି କେବେ ଭେଟିବା ?'

ମଳୟ ବି ଆଖିରେ ଜଣାଇ ଦେଲା 'ହଁ ଶିଘ୍ର ଭେଟିବା।'

ସମୟ ଖରସ୍ରୋତା ନଦୀପରି ବଡ ବେଗମାନ ଓ ଘଟଣା ବହୁଳ। କିନ୍ତୁ ବିରହୀ ପ୍ରେମୀମାନଙ୍କ ପାଇଁ ସମୟ ବହୁତ ଅଳସ ଓ ନିରସ। ଏମାନଙ୍କୁ ଦିନଟା ମାସେ ପରି ଓ ମାସଟା ବର୍ଷ ପରି ଲାଗେ।

ମଳୟ ଏମ୍.ଏସ୍.ସି. ପାସ୍ କଲା। ଚାକିରିଟିଏ ମଧ୍ୟ ପାଇଗଲା।

ଭାଉଜ ଏ ପରିବାରକୁ ଗୋଟିଏ ଉତ୍ତରାଧିକାରୀ ଉପହାର ଦେଲେ। ସହାଯ୍ୟ କରିବା ପାଇଁ ବାସନ୍ତି ପୁଣି ଥରେ ନିମନ୍ତ୍ରିତ ହୋଇ ଆସିଲା।

ମଳୟ ରବିବାରରେ ଘରକୁ ଆସିଥାଏ। ଘରେ ଉତ୍ସବର ପରିବେଶ।

ସକାଳେ ମଳୟ ଅଗଣା ବାରଣ୍ଡାରେ ଖବରକାଗଜ ପଢୁଥିଲା। ଆରପଟ ବାରଣ୍ଡାରେ ବାସନ୍ତି ମା'ଙ୍କର ମୁଣ୍ଡରେ ତେଲ ଲଗାଇ ଦେଉଥିଲା।

ମା' ଏହି ସମୟରେ ବଡପୁଅ ବିନୟକୁ ମଳୟର ଶୀଘ୍ର ବାହାଘର କରିବା ପାଇଁ କହିଲେ। ବିନୟ କହିଲେ 'ହଁ ମା, ମୁଁ ଶୀଘ୍ର ବୁଝାବୁଝି କରି ଠିକ୍ କରିବି। ଆସନ୍ତା ତିଥିରେ ସାରିଦେବା।'

ମା' ଟିକେ ରହି କହିଲେ 'ମୁଁ ଭାବୁଥିଲି, ତୁ ଏକୁଟିଆ ଲୋକ। କୁଆଡ଼େ ଝିଅ ଖୋଜିବୁ। ଭଲ ଝିଅଟିଏ ପାଇବା ବଡ଼ କଷ୍ଟ। ଆମ ବାସନ୍ତି ଭଳି ଭଲ ଝିଅ ଆଉ କୋଇଠି ମିଳିବେ।'

ଏହି ସମୟରେ ପାଖ ବଖରାରେ କ'ଣ ଗୋଟିଏ ପଡ଼ିବାର ଶବ୍ଦ ହେଲ। ସମସ୍ତେ ଯାଇ ଦେଖିଲା ବେଳକୁ ଶିକା ଛିଡ଼ି ଲହୁଣି ଘଡ଼ିଟି ତଳେ ପଡିଛି। ସବୁଦିନେ ଲହୁଣି ଆଶାରେ ନସରପସର ହେଉଥିବା ଘର ବିଲେଇଟି ଆଖିବୁଜି ଲହୁଣି ଖାଇବାରେ ଲାଗିଛି।

ଭାଉଜ କହିଲେ 'ଦେଦଖିଲ, ଏତେ ଦିନେ ବିଲେ କପାଳକୁ ଶିକା ଛିଡ଼ିଲା।' ସମସ୍ତେ ଜୋର ହସି ପକାଇଲେ।

ସେ ବର୍ଷ ଫଗୁଣରେ ମଳୟଙ୍କ ବାଡ଼ି ଆମ୍ବ ଗଛରେ ଅଜସ୍ର କଷି ଆମ୍ବ ଓ ବହଳ ମାଳତୀ ଲତାରେ ଫୁଲ ଲଦି ହୋଇପଡିଥିଲା।

ତ୍ରିଲୋଚନ ବେହେରା

ଭୁବନେଶ୍ୱର

मुस्कान

ये मुस्कान वक्त की मोहताज नहीं होती,
खुशी में भी हजार गम दिखा जाती है,
और गम में भी फूलों जैसी खिल जाती है।
एक छोटे बच्चे की हँसी को देखकर लगता है,
जैसे ये मुस्कुराहट ही उसकी पहचान हो।
एक सच्ची सी खुशी को देखकर लगता है,
जैसे ये खुशी दुनिया के हर गम से अनजान हो।
ये बेपरवाह मुस्कान ही है,
जो किसी को भी जीना सीखा जाती है।
मुस्कुराते लम्हों की नई तस्वीर बनाजाती है,
जब एक चेहरे की हँसी किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट लाती है।
टूटे से दिलों में भी जान आ जाती है,
जब ये बेपरवाह मुस्कान किसी को जीना सिखाती है।
आसमान को देखकर जमीं भी शरमा जाती है,
भँवरों को देखकर तितलियाँ भी गाती हैं।
बेपरवाह मुस्कान तो तारों से भी आती है,
टूटते भी हैं तो किसी की, दुआ बन जाती है।
बेपरवाह मुस्कान तो बूँदों से भी आती है
आसमान से अलग होते ही जमीं से जुड़ जाती है।

प्रियंका पाल
अनुगुळ

ज़िन्दगी का सूत्र

खुशमिज़ाज अन्दाज ही, शान है मेरी
मुस्कुराता हुआ चेहरा पहचान है मेरी .....

मुस्कान है जीवन का अनमोल खज़ाना,
मुस्कान से बनता है जीवन सुहाना,
सफलता का एक सूत्र याद रखना,
चाहे कुछ भी हो जाये मुस्कान मत गँवाना...

ज़िन्दगी कभी मुश्किल तो कभी आसान है,
कभी उफ़ तो कभी वाह है,
न कभी भुलाना अपनी मुस्कुराहट,
क्योंकि इससे हर मुश्किल पार लगती है......

मुस्कुराना एक ऐसा उपहार है,
जो बिना मोल के भी अनमोल है,
इसमें देने वाले का कुछ कम नहीं होता,
और पाने वाला निहाल हो जाता है.....

हर दर्द का इलाज नहीं दवा खाने में,
कुछ दर्द चले जाते है सिर्फ मुस्कुराने में.....

क़भी चुपके से मुस्कुरा कर देखना,
दिल पर लगे पहरे हटा कर देख़ना,
ये ज़िन्दग़ी तेरी खिलखिला उठेगी,
ख़ुद पर कुछ लम्हें लुटा कर देखना.....

फूल बनकर मुस्कुराना है जिंदगी,
मुस्कुराते हुए सब गम भूलना है जिंदगी,
जीत का जश्न तो हर कोई मना लेता है,
हार कर खुशियां मनाना भी है जिंदगी.....

दिपिका कलिआ
भुवनेश्वर

कुछ खास है

चेहरा खुबसूरत लगता है जब आती है मुस्कान,
नूर भी अलग हो जाता है जब आती है मुस्कान।
हर दर्द को छिपा लेती है मुस्कान,
हर खुशी की वजह होती है मुस्कान।
नई आशा की किरण है मुस्कान,
दु:खों का नाश करती है मुस्कान।
सब सुकून की वजह है मुस्कान,
हर चिंताओं से मुक्ति देती है मुस्कान।

दिल में नई उमंग लाती है मुस्कान,
हर अकेलेपन को दूर करती है मुस्कान।
जीत की परिभाषा है मुस्कान,
बेरंग दुनिया में विश्वास लाती है मुस्कान।
क्या चंद्रमा से कुछ खास है!!
हां, और यह है आपकी मुस्कान।

पुष्पश्री स्वाईं
भुवनेश्वर

होली

होली है रंगों का पर्व
प्यार भरे उमंगों का पर्व
सब मिलकर गाएँ गीत
होली और स ऽ र ऽ र ऽ र... सब गीत।

रंग-रंगीले सब दिखते हैं
मन मगन सब मीत

खुशियाँ बाँटने चले है
सभी मानव के बीच।

सातों रंग पड़ते कपड़ों पर
बनते इन्द्रधनुष
तभी दिखते सृष्टि का रूप
इस मानव के बीच।

आओ सभी बैर भुलाकर
रंग गुलाल का थैला लेकर
एक दूजे पे रंग-गुलाल डालकर
जाते सबको प्यार बाँटकर।

कल्पना पासवान
भुवनेश्वर

ହସଟିଏ

କୁହୁକଦୋଳା ଦରୋଟି ହସ
କୁନି ଓଠରେ ତାର
ଭରିଦିଏଟି ମାଆର ମନେ
ଆନନ୍ଦ ଅସୁମାର ॥
ଚଞ୍ଚଳମତି ତରୁଣ ମନ
ମୋବାଇଲ୍ ର ଖେଳ
ଦୁଷ୍ଟାମୀ ହସ ବନାଉଥାଏ
ନୁଆଘର ଆଶାର ।

ପ୍ରେମ ପ୍ରଣୟ ଯୌବନର
ସ୍ୱପ୍ନ ଅସୁମାରୀ
ଛୋଟିଆ ହସ ବାନ୍ଧିଦିଏ
ଦୁଇଟି ମନେ ଡୋରୀ ॥
ସୁଖ ଦୁଃଖର ଜୀବନର
ଆବେଗ ଅବସାଦ
ଟିକିଏ ହସ ଦୂରେଇଦିଏ
ମନର ଅବଶୋଷ ॥

ହସି ହସାଇ ଦୁନିଆଁଟିକୁ
ଦିଅ ଖୁସିରେ ଭରି
ତେବେ ହୋଇବ ତିଆରି ଏଠି
ଗୋଟିଏ ସ୍ୱର୍ଗପୁରୀ ॥

ସୁଷମା ପଟ୍ଟନାୟକ
ଅନୁଗୁଳ

संगिनी
TOUCHING LIVES

Nalco Mahila Samiti, Bhubaneswar has been rendering social services in and around Bhubaneswar. Similarly, Nalco Ladies Clubs at Damanjodi and Angul are also actively contributing their services in and around the plants and townships. It has been the endeavor of these bodies to reach out to the people of all age groups of all sections of our society. Here is a glimpse of activities and achievements of NMS.

At Bhubaneswar

Distribution of mosquito nets at Tampara Nolia Basti, Ganjam

Distribution of Swachhata Kits at Buguda Secondary School

Celebrating Saraswati Puja in a befitting manner with tribal children at NRTC

Antakshari conducted by NMS on the occasion of Viswa Hindi Divas

After women flowers are the most divine creation: NMS at Basant Pushpa Pradarshani

Bidding Adieu to Ex-President, NMS- Smt. Preeti Roy

Farewell to Smt. Poonam Thakur, Advisior, NMS

At Damanjodi

Renovation of Staircase for PUP School

Social Work at Deaf & Dumb School of Sunabeda

Study Materials were distributed
at PUP School, Bhejaput

Social Work on the occasion of Republic Day

Social Work on the occasion of Republic Day

Celebration of Pongal at Nalco Ladies Club

At Angul

Visit to Kapilas with Mrs Priti Roy

Childrens Day Celebration with
Disabled childrens of Balram Prasad, Angul

Farewell to Mrs Poonam Thakur

Celebration of Husbands Nite

Financial Assistance to Two Girl of SVM,
Nalconagar on Republic Day

Visit to Hingula Temple & Talcher with President of
Nalco Mahila Samiti, Mrs Sasmita Patra

Blood Donation Camp at Nalco Ladies Club, Angul

Readers are requested to send their suggestions and feedback to **nmssangini@gmail.com**.
Write ups in clear handwriting or soft copy should reach the Coordinator before 15th March 2020. **- Editor**

नालको NALCO
एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम

भारतीय सार
वैश्विक प्रसार

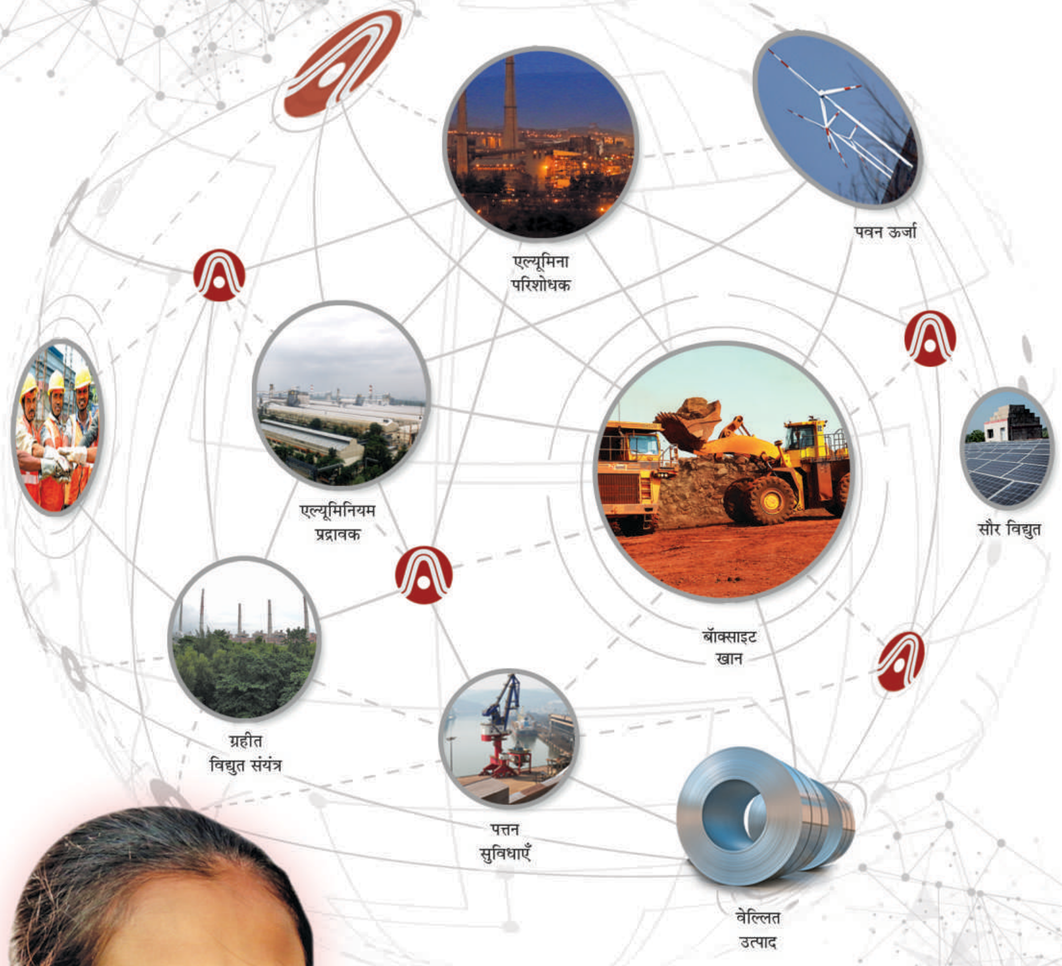

एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्यूमिना और एल्यूमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्यूमिना परिशोधन, एल्यूमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य श्रृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं ।

- विश्व में एल्यूमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
- विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
- तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम

नालको वेबसाईट | नालको ट्विटर | @NALCO_India | @CMDNalco | fb.com/nalcoindia | www.nalcoindia.com